अध्याय 8

वाचा के नवीनीकरण के लिए एज्रा की तैयारी

दो तरीके से नहेम्याह 8 पूर्ववर्ती अध्यायों से भिन्न है। सबसे पहले, इस अध्याय में लेखक ने लेख में अन्य पुरुष का प्रयोग आरंभ किया; नहेम्याह का व्यक्तिगत वक्तव्य (जिसे "मैं" शब्द से अभिव्यक्त किया गया है) 12:27-43 तक नहीं पाया जाता है। दूसरी बात, पुस्तक की कहानी, आत्मिक जागृति से आरंभ होकर अध्याय 10 तक जारी रहता है, जो कहानी को एक नई दिशा प्रदान करता है।

इस पुस्तक के शेष भागों से नहेम्याह 8-10 का संबंध के बारे में टीकाकारों में मतभेद पाया जाता है, जो यह मानते हैं कि मूल रूप से पुस्तक का यह भाग एज्रा की पुस्तक में एज्रा 8 से पहले या एज्रा 10 के बाद पाया जाता था। उनका मानना है कि यह भाग "एज्रा की संस्मरण" का एक भाग है,[1] लेकिन नहेम्याह के प्रथम पुरुष वृतांत की भ्रांति से बचने के लिए इसे अन्य पुरुष में पुनः लिखा गया है। वे कहते हैं कि 8:9 में नहेम्याह का संदर्भ एक अन्तर्वेशन है, जिसे कालांतर में सम्पादक द्वारा जोड़ा गया होगा।[2] यद्यपि अन्य लोग, अध्याय 8 से 10 को नहेम्याह की पुस्तक का मूल भाग मानते हैं और यहाँ जिन घटनाओं का वर्णन किया गया है उसे वे क्रमानुसार स्वीकार करते हैं - अर्थात् अध्याय 7 के पश्चात की घटनाएं और अध्याय 12 में लिखीं शहरपनाह की प्रतिष्ठा से पहले की घटनाएं।[3]

हालाँकि, इस पुस्तक का लेखक स्पष्टतया यह चाहता था कि उसके पाठक सातवें महीने के पहले दिन की सभा के बारे में जानें (7:73; 8:1, 2) जो छठवें महीने एलूल के पच्चीसवें दिन हुआ था (6:15)। नहेम्याह का लोगों को सभा के लिए 7:5 में इकट्ठा करने का निर्णय का परिणाम 8:1, 2 में अभिलिखित किया गया है।

इस बात की संभावना है कि जब लोग इकट्ठा हुए तो नहेम्याह ने उनके नाम उनके वंशावली के अनुसार अंकित किया होगा (देखें 7:6-73)। लगभग यह तय है कि नहेम्याह, कार्य समाप्ति की घोषणा, आत्म जागृति की सभा के साथ करना चाहता था - और उस परियोजना को पूरा करने के लिए यहूदियों को परमेश्वर की व्यवस्था में अपनी रूचि को पुनर्जागृत करना था।

व्यवस्था का पढ़ा जाना (8:1-8)

[1]जब सातवाँ महीना निकट आया, उस समय सब इस्राएली अपने अपने नगर में थे। तब उन सब लोगों ने एक मन होकर, जलफाटक के सामने के चौक में इकट्ठे होकर, एज्रा शास्त्री से कहा कि मूसा की जो व्यवस्था यहोवा ने इस्राएल को दी थी, उसकी पुस्तक ले आ। [2]तब एज्रा याजक सातवें महीने के पहले दिन को क्या स्त्री, क्या पुरुष, जितने सुनकर समझ सकते थे, उन सभों के सामने व्यवस्था को ले आया। [3]वह उसकी बातें भोर से दो पहर तक उस चौक के सामने जो जलफाटक के सामने था, क्या स्त्री, क्या पुरुष और सब समझने वालों को पढ़कर सुनाता रहा; और लोग व्यवस्था की पुस्तक पर कान लगाए रहे। [4]एज्रा शास्त्री काठ के एक मचान पर जो इसी काम के लिये बना था, खड़ा हो गया; और उसकी दाहिनी ओर मत्तित्याह, शेमा, अनायाह, ऊरिय्याह, हिल्किय्याह और मासेयाह; और बाईं ओर पदायाह, मीशाएल, मल्किय्याह, हाशूम, हश्बद्दाना, जकर्याह और मशुल्लाम खड़े हुए। [5]तब एज्रा ने जो सब लोगों से ऊँचे पर था, सभों के देखते उस पुस्तक को खोल दिया; और जब उसने उसको खोला, तब सब लोग उठ खड़े हुए। [6]तब एज्रा ने महान् परमेश्वर यहोवा को धन्य कहा; और सब लोगों ने अपने अपने हाथ उठाकर आमीन, आमीन, कहा; और सिर झुकाकर अपना अपना माथा भूमि पर टेक कर यहोवा को दण्डवत् किया। [7]येशू, बानी, शेरेब्याह, यामीन, अक्कूब, शब्बतै, होदिय्याह, मासेयाह, कलीता, अजर्याह, योजाबाद, हानान और पलायाह नामक लेवीय, लोगों को व्यवस्था समझाते गए, और लोग अपने अपने स्थान पर खड़े रहे। [8]उन्होंने परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक से पढ़कर अर्थ समझा दिया; और लोगों ने पाठ को समझ लिया।

आयत 1. यहूदा में अपने-अपने नगरों को छोड़कर, लोग यरूशलेम में **एक मन होकर** इकट्ठा हुए (देखें एज्रा 3:1)। वे **जलफाटक के सामने के चौक में** इकट्ठे हुए। यह फाटक, जिसका विश्लेषण 3:26 में भी किया गया है, नगर की पूर्व दिशा की ओर स्थित था। यह यरूशलेम के निवासियों को गीहोन की झरने की ओर, जो किद्रोन नाले के नीचे स्थित था, पहुँचाता था। डेरेक किडनर ने पाया कि यह सभा एज्रा 3:1-7 की सभा से भिन्न था जो मन्दिर की वेदी के सम्मुख इकट्ठा नहीं हुआ था। बल्कि लोग नगर की एक चौराहे में इकट्ठे हुए थे। यह नगरीय जीवन का केन्द्र था, जहाँ परमेश्वर की बुद्धि ऊँचे स्वर से बोलती है।"[4] जलफाटक के निकट चौक पर, उन्होंने **एज्रा शास्त्री से कहा कि मूसा की जो व्यवस्था यहोवा ने इस्राएल को दी थी, उसकी पुस्तक ले आए।**

लोग क्यों इकट्ठे हुए थे? चूँकि यह "महीने का प्रथम दिन था" (8:2), तो संभवतः वे इसलिए इकट्ठे हुए थे क्योंकि यहोवा ने उन्हें उस दिन नव-वर्ष का पर्व मनाने की आज्ञा दिया था (लैव्य. 23:23-25)। यह सार्वजनिक कैलेंडर का नव-वर्ष था; जो "रोष हशनाह" के नाम से जाना जाता था। इसके साथ ही, उनको

इसलिए भी इकट्ठा किया गया होगा क्योंकि परमेश्वर ने नहेम्याह को लोगों के वंशावली के अनुसार गिनती करने के लिए कहा था (7:5)।

क्यों उन्होंने "एज्रा शास्त्री" को उनके लिए "मूसा की व्यवस्था" पढ़ने के लिए कहा? इस तथ्य के साथ स्वच्छंदता इनकार किया गया है कि एक काठ का मचान पहले ही बना दिया गया था (8:4)। ऐसा प्रतीत होता है कि भीड़ में से एज्रा के साथ काठ के मचान पर बैठने वाले लोग एवं लेवियों के स्थान के साथ-साथ चर्मपत्र संभालने की प्रक्रिया[5] को भी सावधानीपूर्वक योजनाबद्ध किया गया था। यह सारा आयोजन यह बताता है कि जो अगुवा सावधानीपूर्वक योजना बनाता है और व्यवस्थापन करता है, वही इस आयोजन के लिए जिम्मेदार था। नहेम्याह ऐसा ही अगुवा था। यदि नहेम्याह ने सभा बुलाया था, तो संभवतः उसके कहने से लोगों ने एज्रा को मूसा की "व्यवस्था लाने के लिए कहा होगा।" स्पष्टतया, लोग "एक दुर्लभ अनुक्रियता की मुद्रा" में थे, जिसमें उन्होंने परमेश्वर का वचन सुनने की सामान्य इच्छा जताई। उनकी अभिग्राह्यता उनका "कान लगाकर सुनना" और "समझने वालों को पढ़कर सुनाता रहा" से प्रकट है।[6]

यहाँ नहेम्याह की पुस्तक में पहली बार एज्रा का विवरण क्यों किया गया है? जब शहरपनाह का पुनर्निर्माण किया जा रहा था तब वह कहाँ था?[7] कोई भी नहीं जानता है; इस विषय में पाठ कुछ भी नहीं बताता है। कोई भी यह अनुमान लगा सकता है कि शहरपनाह का निर्माण उसका कार्य नहीं था और यह कि, दो महीने के निर्माण के दौरान वह जो सर्वोत्तम कर सकता था, उसे वह करता रहा अर्थात् वह व्यवस्था का अध्ययन करता रहा और उसे सिखाता रहा (एज्रा 7:10)। चूँकि ऐसी गतिविधि शहरपनाह के पुनर्निर्माण से संबंधित नहीं था, इसलिए संभवतः उसको नहेम्याह की पुस्तक के पूर्ववर्ती अध्यायों में वर्णित नहीं किया गया है। कुछ लोगों का अनुमान है कि उसे फारस वापस बुला लिया गया था और जब वह यरूशलेम लौटकर आया तो लोगों में व्यवस्था पढ़कर सुनने की जिज्ञासा उत्पन्न हो गई थी।[8]

एज्रा ने किस "पुस्तक" से पढ़ा? एडविन एम. यमौची ने चार संभावित दृष्टिकोणों को सूचीबद्ध किया: (1) "व्यवस्था संबंधी सामग्री का संकलन," (2) "याजकों के नियम," (3) "व्यवस्था विधि," और (4) "पंचग्रंथ।"[9] आखिरी दृष्टिकोण लगभग ठीक जान पड़ता है। यह उत्पत्ति की पुस्तक से लेकर व्यवस्थाविवरण की पुस्तक तक हो सकता है जिनका परंपरागत लेखक मूसा माना जाता है। यह अनुच्छेद एक "पुस्तक" (סֵפֶר, *सेपेर*, अर्थ "लेख") को संदर्भित करता है। पुस्तक के लिए जिस शब्द का यहाँ प्रयोग किया गया है वह संभवतः एक चर्मपत्र है; क्योंकि लगभग ईस्वी पश्चात सन् पहली सदी तक पुस्तक का प्रचलन नहीं था। (इस समयावधि के बाद "पुस्तक" को "कोडेक्स" [पाण्डुलिपि] के नाम से जाना जाने लगा।) जिस दस्तावेज को एज्रा पढ़ रहा था वह "मूसा की जो व्यवस्था यहोवा ने इस्राएल को दिया था" (8:1), "व्यवस्था" (8:2, 9), "व्यवस्था की पुस्तक" (8:3), "पुस्तक" (8:5, 8), "परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक" (8:8), "व्यवस्था ... जिसे यहोवा ने मूसा के द्वारा ... दी थी" (8:14), जो "लिखा है" (8:15), "परमेश्वर की

व्यवस्था की पुस्तक" (8:18), और जो पुस्तक जिसमें "व्यवस्था" पाया जाता है (8:18) को संदर्भित करता है। यदि इन पहचानों को यथाशब्द स्वीकारा जाए तो एज्रा ने उस पुस्तक को पढ़ा जिसे यहूदी लोग (1) व्यवस्था, (2) यहोवा के द्वारा दिया गया, (3) इस्राएलियों को, (4) मूसा के द्वारा, (5) जो चर्मपत्रों पर लेख के रूप में सुरक्षित है, स्वीकार करते हैं।

यह भाषा ईश्वरीय प्रेरणा से लिखी व्यवस्था का विश्लेषण करता है जिसका अनुकरण करने के लिए इस्राएली लोग बाध्य थे। वाक्यांश "मूसा की जो व्यवस्था यहोवा ने इस्राएल को दी थी," में "दी थी" (צִוָּה, *त्सावाह*) का यथा अर्थ "आज्ञा दी थी" है। परमेश्वर ने इस्राएलियों को व्यवस्था मानने की "आज्ञा दी थी।" जो यहोवा का भय मानता है वह इस अधिकृत प्रकाशन से छेड़छाड़ नहीं करेगा। इसलिए, यह अत्यंत दुःखद बात है कि आज कई पुराने नियम के विद्वान यह मानते हैं कि "एज्रा की व्यवस्था की पुस्तक, तर्कानुसार, मूसा के नाम और आत्मा में परंपरा का संशोधन व पुनर्लेखन था, लेकिन तथ्य में नहीं था।" इस तर्क का समर्थन करने का तात्पर्य यह है कि "उस दिन एज्रा ने धार्मिक धोखाधड़ी किया था, उसने अपनी संशोधित एड. को मूल प्रति बताया जिसकी लोगों ने मांग की थी।" इस तर्क की अर्थहीनता को इस विचारधारा से रेखांकित किया गया था कि एज्रा ने जोर देते हुए यह चेतावनी दोहराया कि परमेश्वर के प्रकाशन में "न तो कुछ बढ़ाना" और "न तो कुछ घटाना" (व्यव. 4:2; 12:32)।[10] परमेश्वर की लिखित व्यवस्था का महत्व यह विश्लेषण करता है कि बंधुआई उपरांत काल में यहूदी लोग परमेश्वर के वचन पालन करने के लिए समर्पित थे।

आयतें 2, 3. ये आयतें जो कुछ घटना घटित हुआ था उसका सारांश प्रस्तुत करते हैं और आगे की आयतें इस घटना के अवसर का विश्लेषण करते हैं। सारांश यह दर्शाता है कि जिसने **व्यवस्था** पढ़ा वह **एज्रा याजक** था। उसने **उन सभों** को पढ़कर सुनाया जिसमें **पुरुष, स्त्री**[11] और **जितने सुनकर समझ सकते थे**, सम्मिलित थे। इस अंतिम विश्लेषण में वे बच्चे भी सम्मिलित थे जो व्यवस्था समझ सकते थे। सारांश यह भी व्यक्त करता है कि यह घटना **सातवें महीने के पहले दिन** (8:1 की टिप्पणी देखें) घटित हुआ और **भोर** (אוֹר, *ओर)* - अक्षरशः "प्रकाश" से **- दो पहर**, लगभग छटे घण्टे **तक** चला। इसका यह परिणाम निकला कि **लोग व्यवस्था की पुस्तक पर कान लगाए रहे**। जैसे एज्रा ने उनको व्यवस्था पढ़कर सुनाया उन्होंने उसे ध्यानपूर्वक सुना।

एज्रा ने व्यवस्था का कौन सा भाग पढ़ा वह प्रकट नहीं किया गया है। यह प्रत्यक्ष है कि उसने छः घण्टे में पूरा पंचग्रंथ नहीं पढ़ा होगा। संभवतः उसने उन अनुच्छेदों को पढ़ा होगा जो यहूदियों की वर्तमान परिस्थिति से मिलता-जुलता हो। पवित्र शास्त्र का जो भी भाग उसने पढ़ा हो, उसने लोगों को उनके पाप के प्रति निरुत्तर किया और वे विलाप करने लगे (8:9)।

आयत 4. तब लेखक ने पढ़ने के बारे में और अधिक विश्लेषण प्रस्तुत किया। उसने कहा **एज्रा शास्त्री काठ के एक मचान पर जो इसी काम के लिये बना था, खड़ा हो गया -** चूँकि इस पर चौदह लोग खड़े थे तो स्पष्टतया यह एक बहुत बड़ा

मचान था। एज्रा तेरह अन्य लोगों के साथ खड़ा था, **उसकी दाहिनी** ओर छः लोग और **उसकी बाईं** ओर सात। यद्यपि आयत 4 उनके कार्यों का विश्लेषण प्रस्तुत नहीं करता है, लेकिन आयत 8 से यह समझा जा सकता है कि उन्होंने व्यवस्था के अनुच्छेदों को पढ़ने में एज्रा की सहायता किया होगा। मचान के कारण लोगों को एज्रा को पढ़ते हुए देखने व सुनने में सहायता मिली होगी।

आयतें 5, 6. जब **एज्रा ने पुस्तक को खोला और पढ़ने लगा**, तो सब **लोग उठ खड़े हुए**, निस्संदेह उन्होंने ऐसा परमेश्वर के वचन को सम्मान देने के लिए किया होगा। पढ़ने से पहले, **एज्रा ने यहोवा परमेश्वर को धन्य कहा** (देखें 1:5; 9:32)। स्पष्टतया, उन दिनों पवित्र शास्त्र को पढ़ने से पहले परमेश्वर को धन्यवाद देना एक आम परंपरा थी। एज्रा की प्रार्थना "एक संक्षिप्त व स्तुति की साधारण अभिव्यक्ति थी।"[12] **लोगों ने** आमीन, आमीन! कहकर प्रत्युत्तर दिया! तब उन्होंने **सिर झुकाकर अपना अपना माथा भूमि पर टेक कर यहोवा को दण्डवत् किया**। इस अवसर पर कई घटनाएं घटित हुई जो यहूदी सभा की आराधनालयों में आराधना सभा की अनुसरण करने का एक भाग बन गया।

आयत 7. जैसे-जैसे एज्रा पढ़ता गया, ये तेरह **लेवीय**, **लोगों को व्यवस्था समझाते गए।** मूसा की व्यवस्था ने याजकों के साथ-साथ लेवियों को भी व्यवस्था सिखाने की जिम्मेदारी दिया था (व्यव. 33:8, 10; देखें 2 इतिहास 17:7-9; 35:3)। यहाँ दिए गए विवरण से ऐसा प्रतीत होता है कि ये तेरह व्यक्ति भीड़ में तितर-बितर थे (या तेरह उपभाग समूह के साथ थे), जो लोगों को मचान से पढ़ा जाने वाला व्यवस्था का अर्थ समझा रहे थे। संभवतः एज्रा थोड़ी देर पढ़ने के पश्चात रुक जाता था ताकि वह इन लोगों को, जो उसने पढ़ा था, उसका अर्थ समझाने में और उसको लागू करने में सहायता कर सके। तब वह अगला अनुच्छेद पढ़कर उसको विश्लेषण करने का अवसर प्रदान करता था, और इस प्रकार वह आगे बढ़ता गया। उन्होंने उसका विश्लेषण किया जबकि **लोग अपने-अपने स्थान पर खड़े रहे**। NASB के समान दूसरे अनुवादों में भी इस वाक्यांश का अनुवाद "अपने-अपने स्थानों पर रहे" अनुवाद किया गया है (NRSV; NAB; REB; NLT; ESV)। "रहे" के बजाय अन्य अनुवादों में लोग "अपने-अपने स्थानों में खड़े रहे" अनुवाद किया गया है (NKJV; NJPSV; TEV)। इस उत्तरार्ध अनुवाद के कारण कुछ लोगों की मान्यता है कि जब तक व्यवस्था पढ़ा गया, वे सभी लोग पूरे छः घण्टे तक खड़े रहे। संभवतः लेवीय इधर-उधर घूमें होंगे, जबकि लोग वहीं रहे जहाँ वे खड़े थे।

आयत 8. यह अनुच्छेद एक और सारांश वक्तव्य के साथ समाप्त होता है : **उन्होंने परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक से पढ़ा।** संभवतः "उन्होंने" का संदर्भ मचान पर उपस्थित एज्रा और दूसरे लोगों को संदर्भित करता है (8:4)। इब्रानी शब्द קָרָא *(कारा)* का अनुवाद "पढ़ा" है जिसका अर्थ "संबोधित" या "घोषणा" करना है। इस संदर्भ में इसका संकेतार्थ "उच्च स्वर में पढ़ना" है (निर्गमन 24:7; व्यव. 17:19; 2 राजा. 5:7)।[13]

वे **अर्थ समझा दिया**। "समझा दिया" इब्रानी क्रिया פָּרַשׁ (*पारस*) का अनुवाद

है, जिसका अर्थ "भिन्न करना" है। स्पष्टतया, इस संदर्भ में *पारस* शब्द को तीन तरीके से समझा जा सकता है। (1) उन लोगों ने *स्पष्ट रूप* से उल्लेख किया जिससे वे वचन समझ सके। (2) उन्होंने अनुच्छेदों का *विश्लेषण* किया ताकि श्रोता उसका अर्थ समझ सके। (3) उन्होंने धर्मशास्त्र का *मौखिक विश्लेषण* किया जिससे सभा उसको समझ सके। ऐतिहासिक संदर्भ इस दृष्टिकोण का पक्ष लेता है। अधिकांश धर्मशास्त्र इब्रानी भाषा में लिखा गया था, जबकि बेबीलोन की बंधुआई के दौरान यहूदियों का सामान्य भाषा अरामी हो गया था। कालांतर में इस प्रकार की अनुवाद का परिणाम अरामी तारगुम निकला, जो सब लोगों के लिए यहूदी आराधनालयों व अन्य स्थानों में प्रयोग के लिए पुराने नियम का अरामी भाषा में यहूदी अनुवाद था।[14]

व्यवस्था पढ़े जाने का परिणाम (8:9-12)

[9]तब नहेम्याह जो अधिपति था, और एज्रा जो याजक और शास्त्री था, और जो लेवीय लोगों को समझा रहे थे, उन्होंने सब लोगों से कहा, "आज का दिन तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के लिये पवित्र है; इसलिये विलाप न करो और न रोओ।" क्योंकि सब लोग व्यवस्था के वचन सुनकर रोते रहे। [10]फिर उसने उनसे कहा, "जाकर चिकना चिकना भोजन करो और मीठा मीठा रस पियो, और जिनके लिये कुछ तैयार नहीं हुआ उनके पास भोजन सामग्री भेजो; क्योंकि आज का दिन हमारे प्रभु के लिये पवित्र है; और उदास मत रहो, क्योंकि यहोवा का आनन्द तुम्हारा दृढ़ गढ़ है।" [11]यों लेवियों ने सब लोगों को यह कहकर चुप करा दिया, "चुप रहो, क्योंकि आज का दिन पवित्र है; और उदास मत रहो।" [12]तब सब लोग खाने, पीने, भोजन सामग्री भेजने और बड़ा आनन्द मनाने को चले गए, क्योंकि जो वचन उनको समझाए गए थे, उन्हें वे समझ गए थे।

आयत 9. लोग सुनकर रोते रहे क्योंकि परमेश्वर की व्यवस्था के साथ उनका सामना होने के कारण वे अपने पापों से निरुत्तर हो गए थे।[15] फिर भी, **नहेम्याह** जिसकी पहचान यहाँ **अधिपति**[16] और **एज्रा**, जिसको **याजक और शास्त्री** संबोधित किया गया है, ने लोगों से यह कहकर **विलाप** न करने का आग्रह किया कि **"आज का दिन तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के लिये पवित्र है।"** इसका अभिप्राय यह है कि एक पवित्र दिन आनंद करने का समय था न कि रोने या विलाप करने का। परमेश्वर द्वारा पाप क्षमादान के प्रत्युत्तर में लोगों को आनंद करना चाहिए था।

आयतें 10, 11. दो यहूदी अगुवे लोगों को यह समझाने लगे कि उनको अपना आनंद प्रकट करना चाहिए। उनको **चिकना भोजन खाना** चाहिए था, जो अच्छे मांस की ओर संकेत करता है और **मीठा-मीठा रस पीना** चाहिए था, जो संभवतः "मीठे दाखमधु" की ओर संकेत करता था। लातिनी वालगेट में इसके लिए *मूलसम* शब्द प्रयोग किया गया है जिसका अर्थ "शहद मिश्रित दाखरस" है। जिनके पास **भोजन सामग्री नहीं थी -** अर्थात् दरिद्रों के साथ, उनके साथ उन्हें बांटने के लिए

कहा गया था।

लोगों को इसलिए **उदास** होने के लिए नहीं कहा गया था, क्योंकि वह एक **पवित्र दिन** था, इसके बजाय उनको आनंद करने के लिए इसलिए कहा गया था क्योंकि **यहोवा का आनंद** उनका **दृढ़ गढ़** था। तब **लेवियों** ने **सब लोगों को** वह सन्देश दोहराकर **चुप करा दिया**।

आयत 12. जब व्यवस्था का पढ़ा जाना सम्पन्न हुआ, तो लोग उठ खड़े हुए और जो उनको करने के लिए कहा गया था उसको करने के लिए चले गए। उन्होंने खाया और पीया, दरिद्रों को भोजन सामग्री **भेजी** और **बड़ा आनन्द** मनाया, **क्योंकि जो वचन उनको समझाए गए थे, उन्हें वे समझ गए थे**। यद्यपि, परमेश्वर की व्यवस्था को समझने से आरंभ में पीड़ा उत्पन्न होती है लेकिन यह हमें अत्यधिक आनंद की ओर ले जाती है। स्पष्टतया, उस दिन अधिकांश श्रोता अपने-अपने घर लौट आए, लेकिन समस्त प्रजा के पितरों के घराने के मुख्य मुख्य पुरुष आगे की निर्देश के लिए ठहरे रहे (8:13)।

झोपड़ियों का पर्व मनाना (8:13-18)

13दूसरे दिन भी समस्त प्रजा के पितरों के घराने के मुख्य मुख्य पुरुष और याजक और लेवीय लोग, एज्रा शास्त्री के पास व्यवस्था के वचन ध्यान से सुनने के लिये इकट्ठे हुए। 14उन्हें व्यवस्था में यह लिखा हुआ मिला कि यहोवा ने मूसा के द्वारा यह आज्ञा दी थी कि इस्राएली सातवें महीने के पर्व के समय झोपड़ियों में रहा करें, 15और अपने सब नगरों और यरूशलेम में यह सुनाया और प्रचार किया जाए, "पहाड़ पर जाकर जैतून, तैलवृक्ष, मेंहदी, खजूर और घने घने वृक्षों की डालियाँ ले आकर झोपड़ियाँ बनाओ, जैसे कि लिखा है।" 16अतः सब लोग बाहर जाकर डालियाँ ले आए, और अपने अपने घर की छत पर, और अपने आँगनों में, और परमेश्वर के भवन के आँगनों में, और जलफाटक के चौक में, और एप्रैम के फाटक के चौक में, झोपड़ियाँ बना लीं। 17वरन् सब मण्डली के लोग जितने बँधुआई से छूटकर लौट आए थे, झोपड़ियाँ बनाकर उन में रहे। नून के पुत्र यहोशू के दिनों से लेकर उस दिन तक इस्राएलियों ने ऐसा नहीं किया था। उस समय बहुत बड़ा आनन्द हुआ। 18फिर पहले दिन से अन्तिम दिन तक एज्रा ने प्रतिदिन परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक में से पढ़ पढ़कर सुनाया। यों वे सात दिन तक पर्व को मानते रहे, और आठवें दिन नियम के अनुसार महासभा हुई।

सातवें महीने के प्रथम दिन की पर्व के साथ ही परमेश्वर की व्यवस्था का पढ़ा जाना समाप्त नहीं हुआ; यह दूसरे दिन भी समस्त यहूदियों के मुख्य-मुख्य पुरुषों को इस विषय पर और निर्देश देते हुए जारी रहा और यह इस महीने में झोपड़ियों के पर्व के समय तक जारी रहा।

आयत 13. जबकि लोग अपने-अपने घरों को लौट आए थे, उनके मुख्य-मुख्य

पुरुष - **प्रजा के पितरों के घराने के मुख्य मुख्य पुरुष और याजक और लेवीय लोग, और एज्रा शास्त्री - एज्रा** द्वारा चलाए जा रहे परमेश्वर की **व्यवस्था** की संगोष्ठी के लिए ठहरे रहे। यह विशेष निर्देश का सत्र इस दौरान क्यों रखा गया था इसके विषय में हम केवल अनुमान लगा सकते हैं। यदि एज्रा एक दीर्घकालीन अवकाश के पश्चात लौटा था तो ऐसे निर्देश की आवश्यकता थी। दूसरी संभावना यह है कि यह इस्राएलियों के धर्म को पुनर्जागृत करने का नहेम्याह की दूसरी योजना थी। उनके पीछे शहरपनाह का व्यवहारिक पुनर्निर्माण के पश्चात, इस्राएल के मुख्य-मुख्य पुरुषों का परमेश्वर के लोगों के रूप में अलग किए जाने के महत्व को समझना था।

आयत 14. व्यवस्था का विशिष्ट प्रबंध जो उनके ध्यान में लाया गया था वह यह है कि उनको झोपड़ियों का पर्व मनाना था। यह पर्व "सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन" से आरंभ होकर "सात दिनों" के लिए मनाया जाता था (लैव्य. 23:39-43) और यह यहूदियों को मिस्र की दासता से उनका स्वतंत्र किया जाना और कटनी के पर्व मनाने का स्मरण कराता था। यहूदियों का **झोपड़ियों** में, या तम्बुओं में **रहना**, इस आशय से सात दिनों तक रहना था ताकि वे उन दिनों को स्मरण करें कि किस प्रकार उनके पूर्वज जंगल में रहे थे।

आयत 15. जब इस्राएल के घराने के मुख्य-मुख्य पुरुषों ने पर्व के बारे में जाना तो उन्होंने **यरूशलेम में यह सुनाया और प्रचार किया** कि इसको वैसे ही मनाया जाएगा जैसे व्यवस्था में आज्ञा दिया गया है। लोगों को **पहाड़ पर जाकर और घने घने वृक्षों की डालियाँ लाकर झोपड़ियाँ** बनानी थी।

आयत 16. लोगों ने इस आज्ञा को माना और डालियाँ इकट्ठी की, और **अपने लिए झोपड़ियाँ बना** ली। कुछ ने अपने घरों की छतों पर या **आँगनों** में झोपडियाँ बनाई। तो कुछ लोगों ने **चौकों** पर, जैसे मंदिर के **आँगन** पर या नगर के फाटक के **चौक** के निकट झोपड़ियाँ बनाई। यहाँ दो फाटकों: **जलफाटक, और एप्रैम के फाटक** का विशेष रूप से विवरण किया गया है (देखें 3:26; 8:1; 12:37, 39)।

आयत 17. यह अनुच्छेद यह सुझाव देता है कि जिन्होंने पहली झोपड़ियों का पर्व मनाया था, उनसे कहीं अधिक नहेम्याह के दिनों के यहूदियों के पास आनंद मनाने का कारण था। प्रथम इस्राएली लोग इस बात का आनंद मना सकते थे कि उनको मिस्र की दासता से छुटकारा मिल गया था; जबकि अब की इस्राएलियों के पास दो छुटकारा का इतिहास था: पहला मिस्र से छुटकारा और दूसरा बेबीलोन से छुटकारा।[17]

लेखक के इस वक्तव्य से पाठकों को दूसरी छुटकारा के बारे में स्मरण दिलाया गया है कि वे **सब मण्डली के लोग जितने बँधुआई से छूटकर लौट आए थे, झोपड़ियाँ बनाकर उन में रहे। नून के पुत्र यहोशू** का विवरण इस्राएल की प्रथम छुटकारा को संबंधित करता है।

यह कहने के पश्चात कि यहूदी लोग झोपड़ियों में रहे, लेखक ने यह भी कहा कि यहोशू के दिनों से लेकर उस **दिन** तक इस्राएलियों ने ऐसा **नहीं किया था**। स्पष्टतया, लेखक का तात्पर्य यह नहीं था कि यहोशू के दिनों तक इस्राएलियों ने

झोपड़ियों का पर्व नहीं मनाया था, क्योंकि नहेम्याह की पुस्तक के अलावा झोपड़ियों का पर्व मनाने का संदर्भ अन्यत्र भी पाया जाता है (एज्रा 3:4 के संदर्भ को मिलाकर)। बल्कि, उसका यह तात्पर्य था कि पूर्वकाल में कनान देश में प्रवेश करने के पश्चात इतने उत्साह और बड़े आनन्द के साथ उन्होंने पहले कभी झोपड़ियों का पर्व नहीं मनाया था। पर्व के संबंध में पर्व की विधि का सावधानीपूर्वक अनुपालन का परिणाम ही **बड़े आनन्द** का कारण बना।

आयत 18. परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक पढ़े जाने का परिणाम यह हुआ कि “सातवें महीने में पर्व” मनाया गया (8:14), और इसका और अधिक परिणाम यह निकला कि परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक और पढ़ा गया। **फिर पहले दिन से अन्तिम दिन तक एज्रा ने प्रतिदिन परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक में से** पर्व के सात दिनों तक **पढ़ पढ़कर सुनाया।** उसके पश्चात **आठवें दिन - महासभा** के साथ पर्व सम्पन्न हुआ (देखें लैव्य. 23:36; गिनती 29:35-38)।

अनुप्रयोग

परमेश्वर के वचन का आदर करना (अध्याय 8)

यरूशलेम की महासभा में, इस्राएल के लोगों ने एज्रा से “मूसा की जो व्यवस्था यहोवा ने इस्राएल को दी थी,” लाने के लिए कहा (8:1)। एज्रा ने परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक उनके लिए भोर से दोपहर तक-लगभग छः घण्टे तक पढ़ा (8:3)! जब वह पुस्तक खोलकर पढ़ने लगा तब “सब लोग उठ खड़े हुए। तब एज्रा ने महान् परमेश्वर यहोवा को धन्य कहा; और सब लोगों ने अपने अपने हाथ उठाकर ‘आमीन, आमीन,’ कहा; और सिर झुकाकर अपना अपना माथा भूमि पर टेक कर यहोवा को दण्डवत् किया” (8:5, 6)। उनका खड़े रहना, परमेश्वर की स्तुति और हाथ उठाकर “आमीन, आमीन” कहना, और अपना माथा भूमि पर टेकना, परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति, जिसको एज्रा पढ़ने पर था, बड़ा आदर दर्शाता है। वे उसके वचन का आदर करते थे!

कभी-कभी हम बाइबल को अच्छी जगह पर रखकर और दूसरे पुस्तकों से उसका अधिक देखभाल कर, उसके प्रति अधिक सम्मान व्यक्त करते हैं। ऐसा करने में कोई बुराई नहीं है लेकिन बाइबल की कागज व स्याही का सावधानीपूर्वक देखभाल करने से अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि इस पुस्तक की अभिषिक्त संदेश मानना अति महत्वपूर्ण है। हम ऐसा कैसे कर सकते हैं? नहेम्याह 8 परमेश्वर के वचन का आदर करने के लिए कई सुझाव प्रस्तुत करता है।

हमें परमेश्वर का वचन जो उसके द्वारा प्रेरणित है पहचान कर उसका आदर करना है (8:1, 8, 18)। इस अध्याय में बार-बार लेखक ने इस बात पर जोर दिया है कि जो एज्रा ने पढ़ा और जिसको लोगों ने सुना वह परमेश्वर का वचन था जो इस्राएलियों को मूसा द्वारा दिया गया था। हमें परमेश्वर के वचन का भय इसलिए मानना चाहिए क्योंकि यह उसका वचन है जो पवित्र आत्मा की प्रेरणा से दिया गया है (2 तीमु. 3:16, 17)।

बाइबल परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है, दुर्भाग्यवश यह बात कहना पड़ रहा है कि बहुत से लोग आज इस तथ्य को नहीं मानते हैं। वे बाइबल पढ़ सकते हैं और उसे यहाँ तक समझ सकते हैं, कि पाठ उन लोगों के लिए क्या मायने रखता है; लेकिन वे यह नहीं मानते हैं कि यह परमेश्वर की ओर से आया है। इस प्रकार का दृष्टिकोण, मानव जाति के लिए बाइबल की आत्मिक मूल्य का वॉल्.न करता है। यहूदियों ने माना कि व्यवस्था परमेश्वर की ओर से आया है; और यदि हमको बाइबल में पाये जाने वाला आत्मिक आशीष प्राप्त करना है, तो हमें इसकी प्रेरणा स्रोत पर विश्वास करना होगा। इस पाठ में जो कुछ कहा गया है उससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि जो परमेश्वर का वचन सुनता और उस पर विश्वास करता है, वह परमेश्वर और बाइबल की प्रेरणा स्रोत पर विश्वास करता है।

हमें उसके वचन को बार-बार पढ़कर आदर देना चाहिए (8:18)। एज्रा ने न केवल सातवें महीने के पहले दिन बाइबल जोर से पढ़ा बल्कि उसने उस महीने के अन्य दिनों में भी झोपड़ियों के पर्व के दौरान सातों दिन इसे पढ़ा। हमें भी बाइबल पढ़ना चाहिए। यदि हम बाइबल को अलमारी में रखे रहें तो हमें इससे कुछ लाभ नहीं होगा। इसका लाभ लेने से पहले हमें इसको खोलकर पढ़ना होगा। आइये हम अपने आपसे पूछें, "मैं दैनिक, साप्ताहिक, या मासिक रूप से कितना समय परमेश्वर के वचन के साथ बिताता हूँ?" इस्राएली लोग "पुस्तक के लोग" के नाम से जाने जाते हैं।[18] मसीही होने के नाते आज हमको भी उसी प्रकार पवित्रशास्त्र में से ढूँढकर अपने विश्वास का कारण बताने की आवश्यकता है (देखें प्रेरितों. 17:11; 1 पतरस 3:15)। हमें अपने जीवन को नए नियम की शिक्षा के अनुरूप ढालना होगा।

हमें उसके वचन को समझने के द्वारा आदर देना चाहिए (8:7, 8, 13)। न केवल एज्रा और उसके सहयोगियों ने ऊँचे स्वर से बाइबल पढ़ा, बल्कि उन्होंने उसका विश्लेषण भी किया ताकि लोग उसको समझ सकें। प्रजा के मुख्य-मुख्य पुरुषों को और शिक्षा दिया गया ताकि "व्यवस्था के वचन ध्यान से सुनें" (8:13)। पाठ यह बताता है कि व्यवस्था के पढ़े जाने का परिणाम यह निकला कि लोगों ने उसे "समझ" लिया (8:8)।

बाइबल कक्षा में जाकर उसके वचन की व्याख्या सुनने के द्वारा, संदेशों को कान लगाकर सुनने के द्वारा, व इसके अलावा अतिरिक्त, बाइबल अध्ययन के द्वारा हमें लाभ उठाना चाहिए। नहेम्याह 8 की घटनाओं का क्रम एक प्रभावशाली वक्तव्य के साथ प्रारंभ होता है "*सब* लोगों ने एक मन होकर, ... एज्रा शास्त्री से कहा कि मूसा की जो व्यवस्था यहोवा ने इस्राएल को दी थी, उसकी पुस्तक ले आए" (बल दिया गया है)। जो भी वहाँ उपस्थित थे वे परमेश्वर की व्यवस्था को सुनना चाहते थे! क्या हम उसके वचन को स्पष्टता से समझना चाहते हैं?

हमें उसके वचन को हमारे पापों से निरुत्तर करने और हम को पाप क्षमा की ज्ञान से शांति देने तक समझने के द्वारा आदर देना चाहिए (8:9, 10, 12)। एज्रा का परमेश्वर की व्यवस्था पढ़ने का त्वरित प्रभाव यह था कि लोग विलाप करने लगे। उनके रोने का कोई कारण नहीं दिया गया है। हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि वे इसलिए विलाप करने लगे क्योंकि उनको समझ आ गया था कि वे परमेश्वर

की व्यवस्था का पालन नहीं कर रहे थे। बाद में हमें इस अध्याय से पता चलता है कि उन्होंने झोपड़ियों के पर्व से संबंधित व्यवस्था का पूरी तरह पालन नहीं किया था। उनके पाप के ज्ञान ने उनको विलाप करने के लिए विवश किया।

एज्रा और उसके सहयोगियों ने यहूदियों के विलाप का प्रत्युत्तर उनसे आनंद मनाने और अपना आनंद प्रकट करने के लिए चिकना-चिकना भोजन करने और मीठा-मीठा रस पीने और अपनी आशीष को दूसरों के साथ बांटने के द्वारा दिया। स्पष्टतया, एज्रा और प्रजा के अन्य मुख्य-मुख्य पुरुषों ने लोगों के विलाप को उनके पश्चाताप के प्रमाण के रूप में देखा, और वे उन्हें यह आश्वासन देना चाहते थे कि क्योंकि उन्होंने पश्चाताप किया है इसलिए परमेश्वर ने उन्हें क्षमा कर दिया है। परमेश्वर का क्षमादान उनके आनंद का कारण होना चाहिए था।

उसी तरह, आज परमेश्वर का वचन पढ़ने और उसको समझने से वह हमको हमारे पापों के प्रति निरुत्तर करना चाहिए। पिन्तेकुस्त के दिन जिन लोगों ने पतरस को, जब सुसमाचार प्रचार करते सुना तो “उनके हृदय छिद” गए और उन्होंने सुसमाचार पर विश्वास किया (प्रेरितों. 2:37)। जब एक पापी परमेश्वर का वचन सुनता और समझता है तो सभी “पापों” के लिए उसका “हृदय” उसकी आज्ञा को पूरी तरह से न मानने के कारण “छिद” जाना चाहिए (रोमियों 3:23)। पाप से निरुत्तर होने के कारण, पापी को अपने पापों से पश्चाताप करना चाहिए; और पश्चाताप, उसको परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिए बाध्य करना चाहिए और वह उसके अनुग्रह के द्वारा पाप क्षमा पाएगा (देखें प्रेरितों. 2:36-41)। बपतिस्मा के द्वारा उसका पाप धोया जाएगा क्योंकि जो आज्ञा मानते हैं, उन सबके छुटकारे के लिए यीशु ने क्रूस पर अपना लहू बहाया (प्रेरितों. 22:16; इफि. 1:7; कुलु. 1:14)।

तब पाप क्षमा पाने के पश्चात, नए विश्वासियों को विलाप नहीं करना है, उन्हें उदासी छोड़कर, आनंद मनाना है! कूश देश का खोजा, बपतिस्मा लेने के बाद, “आनन्द करता हुआ अपने मार्ग पर चला गया” (प्रेरितों. 8:39)। मसीहियों का जीवन आनंद भरा जीवन है (देखें फिलि. 4:4)।

परमेश्वर का वचन मसीहियों को उनके पापों के लिए विलाप कराता है और पश्चाताप के लिए प्रेरितों. करता है। जब उसके अनुग्रह के द्वारा हमारा पाप क्षमा किया जाता है और हमारे अन्दर “शुद्ध विवेक” (1 पतरस 3:21), उत्पन्न होता है तो उद्धार पाने के कारण यह हमें आनंद करने के लिए प्रेरितों. करता है।

उसकी आज्ञा मानकर हमें उसके वचन का आदर करना चाहिए (8:13)। एज्रा ने प्रजा के मुख्य-मुख्य पुरुषों को परमेश्वर की व्यवस्था में पाए जाने वाले विधियां सिखाईं। उन्हें पता चला कि परमेश्वर ने उन्हें झोपड़ियों का पर्व मनाने की आज्ञा दी है, इसलिए उन्होंने लोगों को पर्व मनाने की आवश्यकता का निर्देश जारी किया। “जैसा लिखा था” ठीक वैसे ही यहूदियों ने इस पर्व को मनाया, जो सैकड़ों वर्ष पूर्व, यहोशू के दिनों से लेकर उस दिन तक इस्राएलियों ने कभी नहीं किया था (8:14-17)।

“जैसा लिखा है,” वैसे ही उसको मानकर आज हमको परमेश्वर के वचन का आदर करना है। कुछ लोग परमेश्वर के वचन का आदर करने का दावा तो करते हैं;

लेकिन इसको मानने की चिंता नहीं करते हैं; उनका दावा, उनके कार्य के साथ मेल नहीं खाता है। वे उन लोगों के समान हैं जिनके बारे में यीशु ने पूछा, "जब तुम मेरा कहना नहीं मानते तो क्यों मुझे 'हे प्रभु, हे प्रभु,' कहते हो?" (लूका 6:46)। परमेश्वर के वचन के प्रति सर्वोच्च आदर, केवल इसे परमेश्वर के प्रेरणा से रचा हुआ मानना, इसे पढ़ना और समझने का प्रयास करना ही नहीं है, बल्कि इसकी आज्ञा मानना है!

उपसंहार। हमें उसके वचन का आदर, पढ़ने या पढ़ने के द्वारा सुनने, समझने, हमारे पापों से हमें निरुत्तर करने, और जब पाप क्षमा किया जाता है तो इसके द्वारा शांति प्रदान करने के द्वारा करना चाहिए। तब उसके पश्चात हमें उसके आज्ञाओं का पालन करना चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं तो परिणामस्वरूप यह किस प्रकार का दिन होता है? नहेम्याह की पुस्तक इस प्रश्न का दो संपूरक उत्तर देता है। पहला, इस प्रकार का दिन "परमेश्वर के लिए पवित्र" है (8:9-11) - एक ऐसा दिन जो परमेश्वर को समर्पित है। दूसरा, यह एक "बड़े आनंद" का दिन है (8:9-12, 17)। नहेम्याह के दिनों के यहूदियों के पास आनंद मनाने का बड़ा कारण था। परमेश्वर ने उनको दोहरा छुड़ौती दिया था - पहला मिस्र की दासता से और फिर बेबीलोन की बंधुआई से। हाल ही में, उनको परमेश्वर की व्यवस्था पढ़कर सुनने और उसको समझने का सुनहरा अवसर मिला था! इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है जब एज्रा ने उनसे कहा, "यहोवा का आनन्द तुम्हारा दृढ़ गढ़ है" (8:10)।

यहूदियों के पास आनंद मनाने का एक अच्छा कारण था और हमारे पास आनंद मनाने का उनसे भी उत्तम कारण है! हमारे अध्ययन में, हमें परमेश्वर के वचन को पढ़ने और समझने का आशीष मिला है। आइये हम इस दिन को "यहोवा के लिए पवित्र दिन" (8:9) और एक "बड़े आनंद" का दिन मानें (8:17)। यदि हमने परमेश्वर के वचन के द्वारा "यीशु मसीह का मरे हुओं में से जी उठने के द्वारा जीवित आशा के लिए नया जन्म पाया है" तो परमेश्वर ने हमें जो उद्धार दिया है उसमें बड़ा आनंद मनाना चाहिए! पहला पतरस 1:3-9 कहता है,

> हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, जिस ने यीशु मसीह के मरे हुओं में से जी उठने के द्वारा, अपनी बड़ी दया से हमें जीवित आशा के लिये नया जन्म दिया, अर्थात एक अविनाशी और निर्मल, और अजर मीरास के लिये जो तुम्हारे लिये स्वर्ग में रखी है; जिन की रक्षा परमेश्वर की सामर्थ से, विश्वास के द्वारा उस उद्धार के लिये, जो आने वाले समय में प्रगट होने वाली है, की जाती है। इस कारण तुम मगन होते हो, यद्यपि अवश्य है कि अब कुछ दिन के लिए नाना प्रकार की परीक्षाओं के कारण दुःख में हो। और यह इसलिये है कि तुम्हारा परखा हुआ विश्वास, जो आग से ताए हुए नाशवान सोने से भी कहीं, अधिक बहुमूल्य है, यीशु मसीह के प्रगट होने पर प्रशंसा, और महिमा, और आदर का कारण ठहरे। उस से तुम बिन देखे प्रेम रखते हो, और अब तो उस पर बिन देखे भी विश्वास करके ऐसे आनन्दित और मगन होते हो, जो वर्णन से बाहर और महिमा से भरा हुआ है। और अपने

विश्वास का प्रतिफल अर्थात आत्माओं का उद्धार प्राप्त करते हो।

प्रभावकारी अगुवापनः उदाहरण प्रस्तुत कर अगुवाई करना (अध्याय 8)

एक प्रभावकारी अगुवा उदाहरण प्रस्तुत कर अगुवाई करता है। वह वही करता है जो वह अपने अनुयायियों को करते हुए देखना चाहता है; वह वहीं जाता है जहाँ वह अपने अनुयायियों को जाते हुए देखना चाहता है। पुरानी कहावत "जो आप नहीं जानते उसे आप नहीं सीखा सकते हैं; और वहाँ आप अगुवाई नहीं कर सकते जहाँ आप नहीं जाते हैं" अभी भी सत्य है।

यह सिद्धांत हर क्षेत्र में लागू होता है। बढ़ई के दल के अगुवे को वह सब करने की इच्छा और क्षमता रखना चाहिए, जो वह अपने कारीगरों को करने के लिए कहता है। एक प्रशिक्षक को, जो अपने दल के सदस्यों को अनुशासन व क्रीड़ा के प्रति समर्पण होने के लिए कहता है, उसे स्वयं उन गुणों को प्रदर्शित करना होगा। जो सेना का युद्ध में अगुवाई करता है उसको स्वयं सेना को आगे ले जाने की इच्छा होनी चाहिए।[19]

जो भी नहेम्याह सिखाना चाहता था उसने उस विशेषता को स्वयं प्रदर्शित किया था। अध्याय 5 इसका सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत करता है। धनाढ्य और शक्तिशाली यहूदी लोग अपने दरिद्र भाइयों को ब्याज पर धन देते थे और जब वे ऋण नहीं चुका पाते थे तो उनकी सम्पत्ति और उनके बच्चे छीनकर उनका शोषण करते थे। नहेम्याह ने इस प्रथा को समाप्त किया और उसने अपराध करने वालों को, जो उन्होंने अनुचित रीति से छीना था, लौटाने के लिए कहा। इस समस्या का समाधान उसने स्वयं अपने उदाहरण के द्वारा प्रदर्शित किया: स्वयं वह और उसके सहयोगी भी, जिनको धन की आवश्यकता होती थी उनको उधार देते थे, लेकिन वे उस पर ब्याज नहीं लगाते थे या जो ऋण नहीं चुका पाते थे उनकी सम्पत्ति वे हड़पते नहीं थे। बल्कि, वे उन यहूदियों को जो दास होने के लिए बेचे गए थे पुनः खरीदकर छुड़ाते थे। इसके साथ ही, नहेम्याह ने यहूदियों से कर नहीं लिया (जबकि उसको कर लेने का अधिकार प्राप्त था)। अपने संसाधनों से ही, उसने 150 यहूदी प्रधानों और उन सभी लोगों के लिए जो अलग-अलग देशों से आते थे, के लिए दैनिक भोजन की व्यवस्था की। मानो नहेम्याह यह कह रहा होगा, "दरिद्रों का शोषण करने के बजाय, तुमको दूसरों की सहायता करने के लिए मेरा अनुकरण करना चाहिए, स्व-लाभ का इनकार करो और हर एक का भला करो।"

नए नियम के समय में यीशु ने उदाहरण प्रस्तुत कर अगुवाई की। उसने लोगों को यह कहकर बुलाया, "मेरे पीछे आओ" (मत्ती 4:19)। बल्कि, उसके उदाहरण का अनुकरण करना, उसके शिष्य होने का प्राथमिक अर्हता है (मत्ती 16:24; यूहन्ना 13:14, 15)। कलीसिया की स्थापना होने के बाद, मसीहियों को लगातार उसके "पद चिह्नों पर चलने" की चुनौती दी गई (1 पतरस 2:21)।

जो प्रेरितों. मसीह का अनुकरण कर रहे थे उन्होंने दूसरों को उनके उदाहरण का अनुकरण करने के लिए कहा। पौलुस ने कुरिन्थियों की कलीसिया को लिखा, "तुम मेरी सी चाल चलो जैसा मैं मसीह की सी चाल चलता हूँ" (1 कुरि. 11:1)।

फिलिप्पियों को उसने कहा, "जो बातें तुम ने मुझ से सीखीं, और ग्रहण की, और सुनी, और मुझ में *देखीं*, उन्हीं का पालन किया करो, तब परमेश्वर जो शान्ति का सोता है तुम्हारे साथ रहेगा" (फिलि. 4:9; बल दिया गया है)।

मसीही अगुवों को उनके स्वामी व प्रेरितों के समान होने के लिए कहा गया है ताकि वे एक ऐसा छाप छोड़ सकें ताकि दूसरे उनका अनुकरण करें। प्रचारकों को उनके लिए जो "वचन, और चाल चलन, और प्रेम, और विश्वास, और पवित्रता में विश्वासियों के लिए आदर्श" प्रस्तुत करने के लिए कहा गया है (1 तीमु. 4:12)। प्राचीनों को यह आदेश दिया गया है,

> कि परमेश्वर के उस झुंड की, जो तुम्हारे बीच में हैं रखवाली करो; और यह दबाव से नहीं, परन्तु परमेश्वर की इच्छा के अनुसार आनन्द से, और नीच-कमाई के लिये नहीं, पर मन लगा कर। और जो लोग तुम्हें सौंपे गए हैं, उन पर अधिकार न जताओ, वरन *झुंड के लिये आदर्श बनो* (1 पतरस 5:2, 3; बल दिया गया है)।

प्राचीनों को आदेश नहीं जारी करना है; उनको झुंड को शिक्षा देने, प्रोत्साहन देने और आदर्श प्रस्तुत करके अगुवाई करना है।

कलीसिया के अगुवों के लिए यह प्रश्न है: आप अपने सदस्यों से जो बनने के लिए कहते हैं, क्या आप स्वयं वैसा करने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं? आपको स्वयं वह करना होगा जो आप लोगों से करने की अपेक्षा करते हैं! यदि आप चाहते हैं कि जिनकी आप अगुवाई करते हैं, वे बाइबल का अध्ययन करें और सत्य से प्रेम रखें, तब आपको यह दिखाना होगा कि आप बाइबल अध्ययन के परिश्रमी विद्यार्थी हैं और सत्य के प्रति समर्पित हैं। यदि आप विश्वासियों को कलीसिया में उपस्थिति में विश्वासयोग्य पाना चाहते हैं, उदारता से दान देते हुए देखना चाहते हैं, उनके जीवन में उन्हें पवित्र देखना चाहते हैं, सुसमाचार प्रचार में सक्रिय देखना चाहते हैं, आत्मिक रूप से उदार देखना चाहते हैं, उनका व्यवहार दूसरों के लिए हितैषीपूर्ण देखना चाहते हैं और पहुनाई में उदार देखना चाहते हैं, तब आपको उनके लिए इस प्रकार के व्यवहार का आदर्श रखना होगा।

स्पष्टतया, एक कलीसिया के अगुवे में, जो हर एक सदस्य कर सकता है वह सब कुछ करने की क्षमता नहीं होना चाहिए; क्योंकि मसीहियों को अलग-अलग वरदान या तोड़े दिए गए हैं। फिर भी, उसको इस प्रकार आदर्श छोड़ना है: (1) सर्वश्रेष्ठ योग्यतानुसार उसको अपना वरदान प्रयोग करना है और (2) यह प्रदर्शित करना कि वह कुछ भी करने के लिए तैयार है, चाहे वह कार्य कितना निम्न स्तर का ही क्यों न हो।

उपसंहार। यदि आप एक प्रभावशाली अगुवा बनते हैं, तो आपको यह स्मरण रखना होगा: आप जो हैं वह उस बात से अधिक महत्वपूर्ण है जो आप बोलते हैं। एक प्रभावकारी अगुवा आदर्श बनकर अगुवाई करता है।

परमेश्वर के वचन को समझना (8:2-8, 12)

परमेश्वर के वचन को “समझने” की महत्वपूर्णता का विश्लेषण नहेम्याह 8 में किया गया है। केवल वही बच्चे उन स्त्री एवं पुरुषों के साथ उपस्थित थे जो “सुनकर समझ सकते थे” (8:2, 3)। जबकि एज्रा ने परमेश्वर की व्यवस्था को पढ़ा, अन्य लोगों ने इसकी “व्याख्या किया” ताकि प्रजा उसको समझ सके (8:7)। परमेश्वर के वचन का अनुवाद या उसकी व्याख्या किया गया ताकि लोग उसको “सुनकर समझ सके” (8:8); अंततः, लोगों ने आनंद मनाया “क्योंकि जो वचन उन को समझाए गए थे, उन्हें वे समझ गए थे” (8:12)।

इस्राएलियों का धर्म व्यवस्था को “समझने” की मांग करता है; उसी तरह मसीही धर्म भी इस बात की मांग करता है। हमारा विश्वास प्राचीनकाल के लोगों के विश्वास से उत्तम नहीं है। मसीही होने का तात्पर्य यह नहीं है कि आपको किसी विशेष रूप में मसीह का अनुभव करना है या केवल उसी का अनुपालन करना है जिसकी व्याख्या विशेषज्ञ ही कर सकते हैं। किसी भी व्यक्ति के लिए मसीही होना और एक मसीही के समान जीने के लिए उसे मसीह की सच्चाई के बारे में जानना आवश्यक है और उसके पश्चात उसको उस ज्ञान के अनुसार कार्य करना है। मसीहियत में मस्तिष्क, और ज्ञान के साथ-साथ मन या भावनाएं भी समायोजित हैं।

चूँकि विश्वास करने के लिए बुद्धि की आवश्यकता होती है तो जब हम बाइबल का अध्ययन करते हैं तो हमें इसके अर्थ को सावधानीपूर्वक छानबीन करना चाहिए। जब हम उच्च स्वर में बाइबल पढ़ते हैं तो हमें इसे ऐसा पढ़ना चाहिए ताकि हमारे श्रोताओं को इसका अर्थ समझ में आए। जब हम शिक्षा देते हैं या प्रचार करते हैं, तो हमें यह ऐसा करना चाहिए जिससे यह हमारे विद्यार्थियों या श्रोताओं को उनके जीवन में परमेश्वर की इच्छा जानने में सहायता करे। हमारा पढ़ना, शिक्षा देना, प्रचार करना, और लेख इतना स्पष्ट होना चाहिए ताकि यह दूसरों को समझने में सहायता करे कि परमेश्वर उनसे क्या कहना चाहता है।

समाप्ति नोट्स

[1]उदाहरण के लिए चार्ल्स टी. फ्रित्स ने लिखा, “स्पष्टतया यह भाग एज्रा की कहानी का खोया हुआ भाग है” (में *दि इंटरप्रेटर्स वन - वोल्यूम कमेंट्री आन द बाइबल*, सम्पादक चार्ल्स एम. लेमन [नैशविलः अबिंगदन प्रेस, 1971], 229) चार्ल्स टी. फ्रित्स, “द बुक आफ नहेम्याह।” [2]यह दृष्टिकोण लेस्ली सी. ऐलेन द्वारा प्रतिपादित किया गया है, यद्यपि उन्होंने यह सुझाव प्रस्तुत किया कि यह अनुच्छेद नहेम्याह की पुस्तक में पाया जाने वाला एक महत्वपूर्ण साहित्यिक व धार्मिक उद्देश्य की पूर्ति करता है। (लेस्ली सी. ऐलेन एण्ड तीमोथी एस. लानिऐक, *एज्रा, नहेम्याह, एस्तेर*, न्यू इंटरनेशनल बिब्लिकल कमेंट्री [पीबॉडी, मासाचुसेट्सः हेन्ड्रिक्शन पब्लिशर्स, 2003], 125, 128-130.) [3]जेम्स बर्टन कॉफमैन और थेल्मा बी. कॉफमैन, *कमेंट्री आन एज्रा, नहेम्याह एण्ड एस्तेर* (एबीलीन, टेक्ससः ACU प्रेस, 1993), 179-80. [4]डेरेक किडनर, *एज्रा एण्ड नहेम्याह,* द टिंडेल ओल्ड टेस्टामेंट कमेंट्री (डॉनर्स ग्रूव, इलिनोय: इंटर-वर्सिटी प्रेस, 1979), 105. [5]जिस तरह पंचग्रथ का चर्मपत्र संभाला जाता था और इसके पढ़ने के द्वारा लोगों की प्रतिक्रिया देखी जा सकती थी, वह

व्यावहारिक या पारंपरिक हो सकता है, या परमेश्वर के वचन का पढ़ना जो पहले विकसित हो चुका था, उससे लिटर्जीकल प्रतिक्रिया प्रतिबिंब होता है। यदि यह ठीक है, तो ऐसा प्रतीत होता है कि शेष व्यवस्था का पढ़ा जाना सावधानीपूर्वक योजनाबद्ध किया गया था। [6]किडनर, 104. [7]कुछ लोगों की मान्यता है कि अध्याय 8 में एज्रा का पहली बार विवरण पाया जाना इस बात का प्रमाण है कि जो कुछ इसके पश्चात होने वाला है वह वास्तव में एज्रा का संस्मरण है। इसके साथ ही वे यह तर्क प्रस्तुत करते हैं कि ये घटनाएं उसके यहूदा ने आगमन् के कुछ दिनों के अंदर घटित हुआ था, लगभग नहेम्याह के आगमन् के बारह वर्ष बाद। यद्यपि, इस दृष्टिकोण का समर्थन नहीं पाया जाता है। [8]कॉफमैन एण्ड कॉफमैन, 181-82. [9]*दि एक्सपोजीटर्स बाइबल कमेंट्री*, वॉल्. 4, *1 राजा-अय्यूब*, सम्पादक फ्रैंक ई. गैबलीन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः जॉडरवैन पब्लिशिंग हाऊस, 1988), 723 में एडविन एम. यामौची, “एज्रा-नहेम्याह।” [10]किडनर, 104.

[11]स्त्रियों को अक्सर औपचारिक सभा से बाहर रखा जाता था। [12]एच. जी. एम. विलियमसन, *एज्रा, नहेम्याह*, वर्ड बिब्लिकल कमेंट्री, वॉल्. 16 (वाको, टेकससः वर्ड बुक्स, 1985), 289. [13]यामौची, 724-25. *कारा* अरबी शब्द *कुरान* के जैसा है, जिसका अर्थ “अनुवाचन” है। यह उत्तरार्द्ध शब्द इस्लाम के धार्मिक ग्रंथों का नाम है। [14]अन्थोनी जे. सल्दारिनी, “अरामाइक,” में *हार्पर्स बाइबल डिक्शनरी*, सम्पादक पॉल जे. अक्टेमेयर (सैन फ्रांसिस्कोः हार्पर & रो, 1985), 43. जबकि यह अनुच्छेद एक ऐसी प्रक्रिया का सुझाव प्रस्तुत करता है, जिसका कालांतर में यहूदी आराधनालयों में अनुकरण किया गया और जिसका अंतिम परिणाम तारगूम्स निकला, लिखित तारगूम की तिथि नहेम्याह के कई वर्षों पश्चात प्रचलन में आया। [15]2 राजा 22:11-13 और 2 इतिहास 34:19-21 में योशिय्याह को भी व्यवस्था के पढ़े जाने द्वारा इसी तरह का अनुभव हुआ था। [16]7:65, 70 के जैसे, תִּרְשָׁתָא (*थिरसाटा*) शब्द पारसी उपाधि था। [17]एज्रा और नहेम्याह द्वारा वापसी और पुनर्निर्माण की घटना “द्वितीय निर्गमन” का चित्रण इस वाक्यांश से “जो बंधुआई से छुटकर लौटे थे,” और झोड़ियों का पर्व मनाने, से करता है। (मार्क ए. थ्रोंटवीट, *एज्रा-नहेम्याह*, इंटरप्रिटेशन [लुईविलः जॉन नॉक्स प्रेस, 1992], 99.) [18]बी. एस. जे. इस्सरलीन ने लिखा, “पूर्वकाल में, इस्राएलियों द्वारा माने जाने वाले ईश्वर का सम्मान पड़ोसी देशों में भी किया जाता था। कालांतर में इस्राएली लोग ‘पुस्तक के लोग’ के नाम से विश्वख्यात हुए। उनका पवित्र शास्त्र, व्यवस्था और विधियों का मिलन हुआ और समय-समय इसने प्राचीन संसार का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया” (बी. एस. जे. इस्सरलीन, *दि इज्राएलाइट्स* [मिनियापोलीसः फोर्ट्रेस प्रेस, 2001], 8). [19]एक सच्चे अगुवे को यह दर्शाना होगा कि वह स्वयं उस कार्य के लिए सबसे अधिक समर्पित है।